महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya

PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

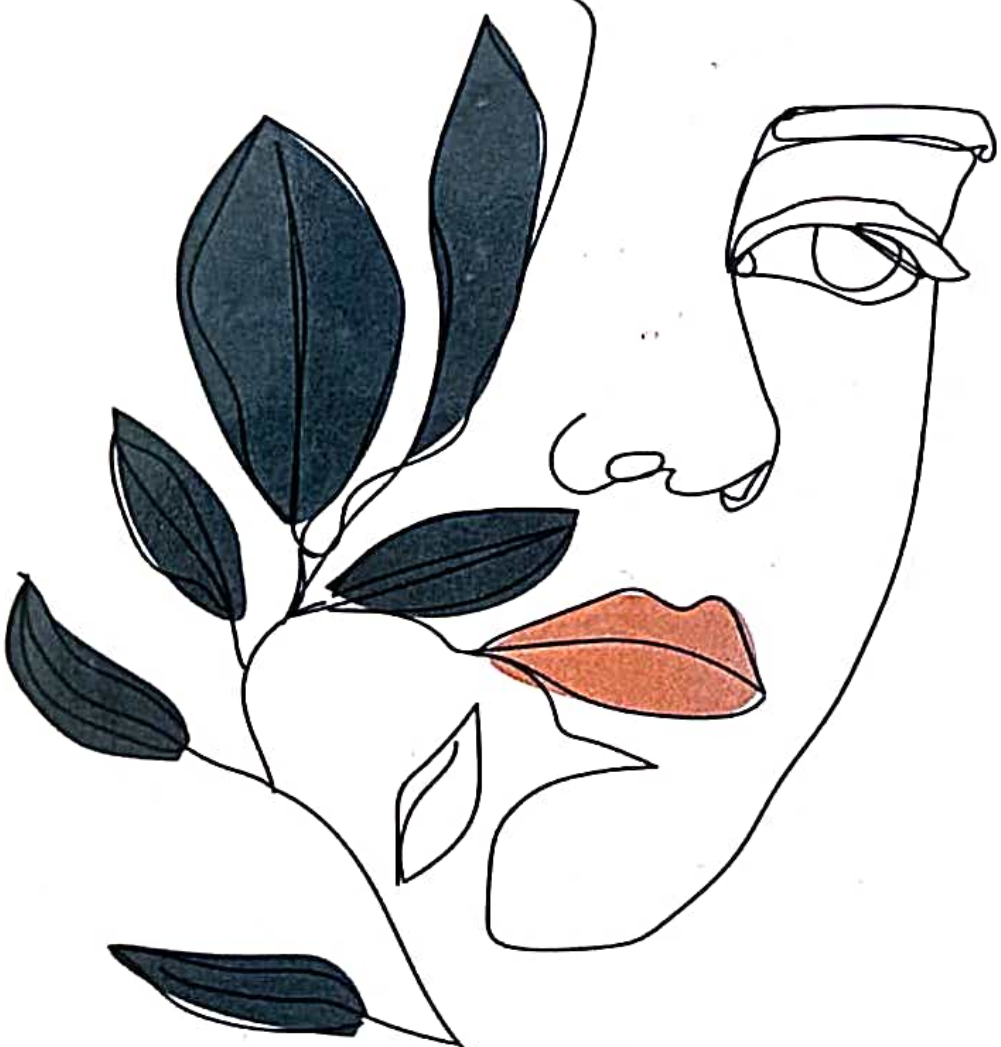

सम्पादक
डॉ. माया सगरे-लक्का

सह-सम्पादक
डॉ. श्रीनिवास मूर्ति
डॉ. नंदिनी चौबे

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान
सम्पादक	:	डॉ. माया सगरे- लक्का
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2023 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	800/-
ISBN	:	978-93-95922-18-0

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

5.	नीला आकाश उपन्यास में स्त्री पात्र **डॉ. वानिश्री बुग्गी**	159-1
6.	'शेष यात्रा' उपन्यास में चित्रित भारतीय नारी के संघर्ष की गाथा **विक्रम बालकृष्ण वारंग**	164-167
7.	लक्ष्मीकांत वर्मा के प्रमुख उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण **डॉ. श्रीनिवास मूर्ति के.**	168-174
8.	प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री विमर्श **डॉ. नंदिनी चौबे**	175-180
9.	उषा प्रियम्वदा के कथा साहित्य में कामकाजी स्त्री : विविध संदर्भ **डॉ. पूनम सिंह**	181-186
30.	हिमांशु जोशी की कहानियों में नारी-चित्रण **डॉ. के. आर. शशिकला राव**	187-193
31.	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री **डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील**	194-198
32.	हिंदी कथा साहित्य में वर्णित नारी : घर और बाहर **डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी**	199-203
33.	आधुनिक कहानियों में नौकरीपेशा नारी का स्वरूप **डॉ. के. प्रिया नायडू**	204-208
34.	महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान (मालती जोशी की कहानियों के संदर्भ में) **डॉ. अनिता वेताल/अत्रे**	209-213
35.	यशपाल के कथा साहित्य में 'स्त्री' **डॉ. रमेश यादव**	214-221
36.	नवें दशक के नाटकों में नारी समस्याएँ **डॉ. कंचन कुडचीकर**	222-227
37.	स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श	228-232

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

29

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में कामकाजी स्त्री : विविध संदर्भ

डॉ. पूनम सिंह

उषा प्रियंवदा हिंदी महिला लेखिकाओं में अपनी विशेष पहचान रखती हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री समाज के प्रति जिन पारंपरिक सामाजिक मूल्य में परिवर्तन घटित हुआ, इसका जीवंत दस्तावेज हमें उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में देखने को मिलता है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री शिक्षा के साधन उपलब्ध हुए। शिक्षा ग्रहण करने के बाद परिवार के आर्थिक दवाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, दहेज जुगाड़ने की मजबूरी और आर्थिक आत्मनिर्भर होने की मानसिकता के तहत स्त्री रोजगार की तरफ अग्रसर हुई। प्रारंभ में पुरुषतांत्रिक सोच के तहत इसका विरोध हुआ, पर धीरे-धीरे परिवार और समाज को इसमें आर्थिक उन्नति का माध्यम दिखा। इसलिए कालांतर में यह समाज-स्वीकृत मूल्य वन गया। स्वातन्त्र्योत्तर परिदृश्य में स्त्री के कामकाजी मूल्य को समाज की अनिवार्य जरूरत मानते हुए डॉ० घनश्याम दास भुतड़ा कहते हैं- "स्वातंत्र्योत्तर काल में देश की भयावह समस्याओं के कारण नारियों को एक मजबूरी से कामकाजी रूप धारण करना पड़ा। परिवर्तित अर्थ-व्यवस्था एवं एकल कुटुंब के कारण पुराने मूल्यों के स्थान पर नये मूल्यों को चुपचाप स्वीकृति देनी पड़ी।"[1] स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के मूल्य के दर्शन हम उषा प्रियंवदा के साहित्य में कर सकते हैं। उनके कथा-साहित्य में स्त्री के कामकाजी मूल्य का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया।

उषा प्रियंवदा ने कामकाजी स्त्री समाज को उसके समस्त जीवन-संघर्ष के साथ प्रस्तुत किया है। उनके कथा-साहित्य में चाहे स्त्री अविवाहित हो या विवाहित, अथवा तलाकशुदा या विधवा, हर वर्ग की स्त्री कामकाजी है और आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति में अपने और अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारियाँ उठाने में सक्षम है। अर्थोपार्जन के लिए नौकरी करना आज भले ही आम बात हो, पर साठ के दशक में स्त्री के लिए